झील से गाद निकालना : फतहसागर झील के रानी रोड़ के पश्चिम, उत्तर–पश्चिम एवं दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र के झील पेटे से गाद निकालने का कार्य हिन्दुस्तान जिंक एवं अन्य संस्थाओं के सी.एस.आर. फण्ड के सहयोग से नगर विकास प्रन्यास द्वारा किया जाता रहा है। इस कार्य के साथ पक्षियों हेतु सुगम प्रवास के लिए टापू भी बनाए गये, यह कार्य प्रशंसनीय है। गाद निकालने का कार्य करने से पूर्व झील के विशेष क्षेत्र को चिह्नित कर किस गहराई तक गाद निकालना है, यह कार्य अवश्य जल वैज्ञानिक के परामर्श एवं निर्देशन में किया गया होगा। साथ ही स्थानीय व प्रवासी पक्षियों के कितने टापू बनाये जायेंगे तथा आपस में कितनी दूरी एवं ऊँचाई रखी जायेगी, इसका भी निर्धारण पक्षी विशेषज्ञों के परामर्श से ही किया गया होगा। अधिकतम् पक्षियों के प्रवास के लिए टापुओं के साथ उथले पानी की भी आवश्यकता होगी, जिससे उन्हें भोजन, घास, छोटी मछलियाँ आदि सुगमता से मिलने की सुविधा रहेगी। टापू बनाने के लिए उसके चारों ओर छोटे–बड़े खड्डे मशीनों से खोदकर गाद से टापू बनाये गये हैं। गाद को एक किनारे से झील के अन्दर निश्चित क्षेत्र तक हल्का ढलान रखते हुए गाद निकालकर टापू बनाये जाते, तो उत्तम रहता। रानी रोड़ वाले पश्चिमी छोर पर कच्ची चट्टानों को भी खोद दिया गया। चट्टानों के बेस बनाकर टापू बनाये जाते तो झील में पानी आने पर इन कृत्रिम टापुओं को क्षति पहुँचने की संभावना कम रहती। फतहसागर झील में कहीं से भी सीधे नदी का पानी समाहित नहीं होता है। ऐसे में इसमें गाद की मात्रा भी काफी कम है। मदार छोटा व मदार बड़ा से थूर, चिकलवास होते हुए पानी फतहसागर में पहुंचता है तो दूसरी ओर देवास, नान्देश्वर, पिछोला, रंगसागर, स्वरूप सागर होकर पानी यहाँ आता है। इससे अधिकांश गाद मार्ग के अन्य तालाबों में ही बैठ जाता है।

विशेषज्ञों के मतानुसार झील के पेटे की कच्ची चट्टानों से छेड़छाड़ किसी भी स्थिति में सुरक्षित नहीं है। प्राकृतिक शिराएँ कहीं पर भी खुल सकती हैं। ऐसा होने पर झील का पानी तेजी से भूमिगत हो जायेगा। अतः झीलों से गाद निकालने के कार्य में मशीनों का उपयोग पूर्ण सावधानी के साथ किया जाना चाहिये तथा कच्ची एवं पक्की चट्टानों को किसी भी सूरत में नहीं हटाना चाहिये। फतहसागर झील को गहरा करने के लिए नगर विकास प्रन्यास की ओर से चल रहे गाद निकालने के कार्य के अन्तर्गत आमजन भी व्यक्तिगत उपयोग हेतु निःशुल्क मिट्टी ले जा सकते हैं। लेकिन इसके व्यावसायिक उपयोग पर पूर्णतया रोक लगा दी गई है। इस कार्य में ऐसी कार्य प्रणाली को अपनाया जाना चाहिये जिससे नगर विकास प्रन्यास या अन्य प्रतिष्ठान के सी.एस.आर. फण्ड का उपयोग नही करना पड़े। नगर विकास प्रन्यास को फतहसागर झील में गहरे किये जाने वाले उपयुक्त स्थलों के चयन के साथ गहराई निश्चित कर आमजन, किसान एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों को पूर्ण सजगता रखते हुए निःशुल्क गाद निकालने के लिए स्वीकृति देनी चाहिये। सुरक्षा की दृष्टि से गाद खुदाई व भराई के लिए जे.सी.बी. नगर विकास प्रन्यास एवं मिट्टी उठाने वाले किसान एवं ईंट–भट्टें मालिक अपना ट्रेक्टर एवं डमपर लगावें, तो अधिक उत्तम होगा। नियमानुसार कार्य की निगरानी के लिए उच्च स्तर के अधिकारियों को नियुक्त करना चाहिये। स्थान चयन एवं गहराई के लिए तकनीकी विशेषज्ञों की सलाह भी लेनी चाहिये।

बड़ी रोड़ पर स्थित निचली तलाई

बड़ी रोड़ स्थित फतहसागर का उत्तरी छोर

रानी रोड़ स्थित फतहसागर का पश्चिमी छोर – नव निर्मित टापू

रानी रोड़ स्थित छोटी तलाई

फतहसागर में नवनिर्मित टापू

फतहसागर में स्थित प्राकृतिक टापू

रानी रोड़ स्थित राजीव गाँधी पार्क के सामने – नव निर्मित टापू

फतहसागर पर गन्दगी एवं खरपतवार से प्रभावित क्षेत्र

: फतहसागर पाल की छतरियों वाले तट पर पानी की सतह एवं आसपास के कुछ और क्षेत्रों पर प्रायः प्लास्टिक बोतल, कप, थैलियाँ, कागज के टुकड़े, भुट्टे की डूड़ियाँ, काई के साथ जलकुंभी आदि भी तैरती रहती है। मुख्य फतहसागर झील में भी कुछ क्षेत्रों से जैसे उपला तालाब, निचली तलाई, बम्बईयाँ बाजार, उत्तरी–पूर्वी किनारा (फतह पार्क के सामने), अम्बावगढ़ के नीचे, होटल लेकएण्ड के पास आवासीय क्षेत्र से गन्दा सीवरेज युक्त पानी झील में प्रवेश करने से जल में पोषक तत्त्वों की वृद्धि से पानी पर तैरने वाली व जलमग्न खरपतवार, काई आदि पनपती है। इसके अतिरिक्त शहरवासी एवं पर्यटक लापरवाही या अनजाने में इस झील में खाद्य पदार्थ के अवशेष, पैकिंग सामग्री आदि फेंकते हुए देखे जा सकते हैं। कचरा पात्र से भी प्लास्टिक थैलियाँ, बोतल आदि उड़कर उनके पास जल सतह पर तैरती हुई मिल जायेगी। त्यौहारों एवं मन्दिरों में पूजन उपरान्त श्रद्धालु भी फूल–मालाएँ, पूजन सामग्री, नारियल अवशिष्ट आदि को भी जल में विसर्जित करते हुए देखे गये हैं।

इन क्षेत्रों की नियमित रूप से प्रतिदिन सफाई होनी चाहिए जिससे तैरती हुई गन्दगी हटाने के साथ जलकुंभी एवं जलमग्न खरपतवारों को रोकना संभव होगा। देशी–विदेशी पर्यटकों एवं स्थानीय नागरिकों को गन्दगी डालने पर समझाईश अथवा दण्डनीय प्रक्रिया द्वारा रोका जाना चाहिये।

इस झील की सफाई भी उसी तरह से करनी चाहिये जैसे कॉलोनियों व मोहल्लों में की जाती है। एक या एक से अधिक सफाईकर्मी को एक निश्चित क्षेत्र की सफाई के लिए जिम्मेदारी दी जानी चाहिये। झील के आसपास की सफाई का कार्य रात्रिकालीन समय में करने के अतिरिक्त पौधों की क्यारियों एवं कूड़ेदान की सफाई की जिम्मेदारी भी उसी कर्मचारी की हो, यह सुनिश्चित किया जाना चाहिये।

फतहसागर की पाल के ओवरफ्लो के पास पसरी जलकुंभी

पानी की सतह पर तैरती फूल-मालाएं एवं अन्य पूजन सामग्री

जलदाय विभाग के पास स्थित घाट से विसर्जित मूर्तियों के अवशेष

उत्तरी छोर के पास जलकुंभी का फैलाव

काले किवाड़ के आगे फतहसागर झील जब अधिकतम् जल स्तर पर होती है, तब इसका दृश्य अद्वितीय होता है। लेकिन कुछ शहरवासी पूजन सामग्री, फूल–मालाएं आदि झील में विसर्जित कर देते हैं, जो लहरों के माध्यम से पुनः सड़क पर आ जाती है। इसके कारण अति सुन्दर झील के दृश्य के साथ इसका गन्दगी एवं प्रदूषित स्वरूप परिलक्षित होता हैं। हमें सामूहिक रूप से पहल कर उक्त सामग्री विसर्जित करने वालों को जल के महत्व से अवगत कराते हुए ऐसा नहीं करने हेतु आग्रह करने के साथ स्थानीय प्रशासन को भी इस ओर सजगता से प्रयास करने चाहिये।

फतेश्वर महादेव : सर्किट हाउस एवं गुरु गोविन्द सिंह पार्क के मध्य यह मन्दिर स्थित है। मन्दिर के पुजारी के अनुसार नेहरू गार्डन के निर्माण के समय लाये गये पत्थरों में भगवान शिव की प्रतिमा मिली, जिसे इस मन्दिर स्थल में स्थित बड़ के पेड़ के नीचे रखा गया था। तत्पश्चात् मन्दिर निर्माणोपरान्त इस प्रतिमा को मन्दिर में स्थापित किया गया। इस प्रतिमा को किसी भी पण्डित द्वारा स्थापित नहीं किया

गया है तथा यह स्वतः स्थापित प्रतिमा है। भगवान शिव के समक्ष नन्दी को विधि–विधान से पंडितों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। एक मान्यता के अनुसार कोई भी व्यक्ति भगवान शिव एवं नन्दी की अन्तःमन से पूजा–अर्चना करता है, तो वह शाम होते–होते ही इच्छित फल प्राप्त कर लेता है। इस मन्दिर में राधा–कृष्णजी, सीता–रामजी, हनुमानजी, श्रीनाथजी, गणपतिजी के मन्दिर भी स्थित हैं, जो अलग–अलग समय में विभिन्न समुदायों के द्वारा स्थापित किये गये हैं।

श्री गिरधर गोपाल मन्दिर : यह प्राचीन भव्य मन्दिर मोती मगरी के पूर्वी छोर पर नीलकंठ महादेव मन्दिर के सामने नगर विकास प्रन्यास से फतहसागर रोड़ पर स्थित है। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार 1988–89 में महाराणा प्रताप स्मारक समिति, मोती मगरी, उदयपुर द्वारा करवाया गया तथा 15 मई, 1989 को राधा–कृष्ण की बहुत सुन्दर मूर्तियों की प्राण–प्रतिष्ठा पूर्ण विधि–विधान से की गई।

श्री नीलकंठ महादेव मन्दिर : यह मन्दिर नगर विकास प्रन्यास कार्यालय से फतहसागर की ओर आने वाले रास्ते के मध्य एवं श्री गिरधर गोपाल मन्दिर के ठीक सामने स्थित है। भक्ति और शक्ति की इस पवित्र तीर्थ भूमि के इस ऐतिहासिक मन्दिर में स्वयं महाराणा प्रताप मोती मगरी से उतरकर मन्दिर में स्थित अति प्राचीन नौग्रह बावड़ी से जल लेकर महादेव का अभिषेक कर पूजा–पाठ करते थे। मन्दिर परिसर में प्राचीन बावड़ी एवं नन्दी स्थित है। इस मन्दिर परिसर में भारत माता, राधाकृष्ण एवं हनुमान जी मन्दिर के साथ महाराणा प्रताप की ऐतिहासिक प्रतिमा स्थापित की गई है।

यहाँ प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि के अवसर पर विशाल भजन संध्या एवं मेले का आयोजन किया जाता है। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार शिव दल मेवाड़ द्वारा किया गया तथा इसका नियमित रखरखाव भी इसी संस्था द्वारा किया जा रहा है।

मोती महल (वर्तमान टाया पैलेस) : फतहसागर की पाल के ऊपर मध्य में संगमरमर से निर्मित एक छोटा–सा मोतीमहल स्थित है। यह महल पूर्व में राजमहलों में जहाँ शिव निवास महल स्थित है, वहाँ स्थित था। महाराणा फतहसिंह जी ने जब शिव निवास महल बनवाना प्रारम्भ किया, तब इस मोती महल को वहाँ से उठवाकर फतहसागर पाल के मध्य स्थापित किया। फतहसागर पाल को महाराणा फतहसिंह ने अपने शासनकाल में बनवाया था। महाराणा फतहसागर तक भ्रमण के दौरान इस मोती महल में विश्राम करते थे। यहाँ से नाव में सवार होने की पूरी सुविधा थी। यह उदयपुर के दर्शनीय स्थलों में से एक है। वर्तमान में यह टाया पैलेस के रूप में जाना जाता है।

पाल के मध्य टाया पैलेस से फतहसागर का अविस्मरणीय दृश्य देखने का सुअवसर पर्यटकों को मिलना चाहिये। इस संबंध में प्रशासन एवं टाया पैलेस मालिक के मध्य समझौते के अन्तर्गत यह सुविधा मिलनी चाहिये। यहाँ की छत से उच्च स्तर के टेलीस्कॉप के माध्यम से उदयपुर के सुन्दर दृश्य मोती मगरी, नीमच माता, सज्जनगढ़, नेहरू पार्क, राजीव गाँधी पार्क आदि का दृश्यावलोकन किया जा सकता है। यह सुविधा पर्यटकों और शहरवासियों को निम्नतर दर पर उपलब्ध होनी चाहिये।

मोबाइल लाईब्रेरी : उदयपुर नगर निगम हेप्पीनेस इंडेक्स प्रोजेक्ट के तहत लोगों को प्रसन्नचित्त रखने की अनूठी मुहिम के अन्तर्गत फतहसागर पाल के दक्षिणी छोर के प्रवेश द्वार के पास एक मोबाइल लाईब्रेरी की स्थापना की गई है। इसमें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं की 1500 से अधिक समाजशास्त्र, इतिहास, हिन्दी साहित्य आदि की कहानियाँ, सकारात्मक सोच, खुशियों से ओत–प्रोत एवं प्रेरणादायी पुस्तकें रखी गई हैं। शहरवासी एवं पर्यटक इन पुस्तकों का प्रातः 8.00 बजे से सांय 6.00 बजे तक निःशुल्क अध्ययन करने का आनन्द लेकर पुनः जमा करवाते हैं। इसके लिए एक मोबाइल वेन दानदाताओं के सहयोग से तैयार की गई। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी पुस्तकें भी रखी गई हैं जिन्हें पढ़कर लोगों में तनाव रहित जीवन जीने के साथ स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने में मदद मिलेगी। इस लाईब्रेरी में उदयपुर शहर से प्रकाशित होने वाले मुख्य समाचार पत्रों की प्रतियाँ भी पाठकों हेतु उपलब्ध रहनी चाहिये। देश की विशिष्ट उपलब्धियों की पुस्तकें, नवीन उपन्यास आदि भी इस लाईब्रेरी में सुलभ होने चाहिये। वर्तमान में यह फतहसागर से किसी अन्य स्थान पर स्थानान्तरित कर दी गई है।

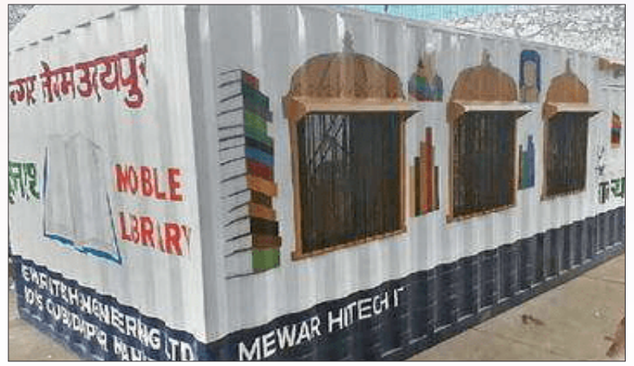

नेवी का प्रशिक्षण स्थल : मोती महल (टाया पैलेस) के पास वर्षों से संचालित नेवी का प्रशिक्षण स्थल जहाँ प्रशिक्षण में उपयोग ली जा रही प्रचलित नावें महल के कोने की जल सतह पर लंगर डाले हुए देखी जा सकती हैं, जो दर्शनीय है। यहाँ पर अनेक उच्च स्तरीय महंगी नावें भी परिलक्षित होती हैं। इन विशिष्ट नावों का भण्डारण स्थल के अभाव में समुचित रखरखाव संभव नहीं है। इस प्रशिक्षण स्थल को रानी रोड के प्रारम्भ या किसी उचित स्थान पर नगर विकास प्रन्यास द्वारा एक आधुनिक जेटी बनाकर स्थानान्तरित किया जा सकता है, जहाँ प्रशिक्षण एवं नावों का लंगर अधिक सुविधाजनक रहे। फतहसागर का विशेष निर्धारित क्षेत्र (रानी रोड प्रारम्भ से पाल तक) नेवी के प्रशिक्षण हेतु आरक्षित किया जाना चाहिये।

फतहसागर पाल की बंसियाँ : फतहसागर के तटबंध पर वाहनों की टक्कर अथवा सुनियोजित तरीके से निर्माण नहीं होने से बँसिया अक्सर टूट जाती हैं, जब उनका पुनर्निर्माण किया जाता है तो उनका आकार, ऊँचाई, निर्माण व गुणवत्ता एक जैसी नहीं रहती है, फतहसागर पर बनी हुई सभी बंसियाँ देखने पर यह आभास होता है।

पूर्व में फतहसागर के तटबंध की बंसियाँ पत्थर की बनी हुई थी, जिन्हें पिछले कुछ वर्षों से सीमेन्ट–कंकरीट से बनाया जाने लगा है। अधिकांश लोग व तकनीकी जानकार पाल पर सीमेन्ट–कंकरीट की बंसियों के स्थान पर पट्टियों से बनी बंसियों को अधिक मजबूत मानते हैं। साथ ही विरासत का स्वरूप ले चुके तटबंध पर लगी ये बंसियाँ 125 वर्ष से अधिक पुरानी हैं एवं फतहसागर की पहचान है। इसके स्वरूप को

बंसियों के निर्माण में समरूपता एवं उच्च गुणवत्ता का अभाव

बदलना विरासत से छेड़छाड़ के समान है। प्रशासन को इस पर भी विचार करना चाहिए। पर्यटकों का आकर्षण झील के स्वरूप के साथ जुड़ा है।

इन बंसियों को सीमेन्ट–कंकरीट से एक जैसे फर्मे का उपयोग करते हुए उच्च तकनीकी मापदण्ड के साथ बनाया जाना चाहिये। इन्हें पूर्वनिर्मित बंसियों की संरचनाओं के द्वारा बनाना अधिक उचित होगा। झील की अधिकतम् जल भराव क्षमता की चिह्नित रेखा से कुछ ऊपर इन बंसियों का निर्माण करने से इनमें समरूपता दिखेगी तथा समय के साथ इनका आधार स्तम्भ भी परिवर्तित नहीं होगा।

फुटपाथ एवं पोल : फतहसागर पर मोती मगरी के राधाकृष्ण मन्दिर से जल प्रपात स्थल तक, रानी रोड (रिंग रोड) एवं अन्य स्थानों पर फुटपाथ व्यवस्थित रूप से बनी हुई है, परन्तु कुछ स्थानों पर यह अव्यवस्थित हैं। अव्यवस्थित फुटपाथ के कारण फतहसागर पर आने वाले पर्यटक एवं स्थानीय नागरिकों को दर्शनीय एवं सुन्दर फतहसागर के भ्रमण के दौरान दुर्घटनाग्रस्त होने का भय सदैव बना रहता है। फतहसागर के तट पर बन्सियों के साथ एक जैसी चौड़ाई की फुटपाथ बहुत सुन्दर रूप से निर्मित हो, जिस पर खड़े रहकर फतहसागर झील का भव्यता से सिंहावलोकन किया जा सके एवं निर्भीकता से उन पर चला जा सकें । दुर्घटना, जाम आदि स्थितियों से भी बचा जा सके। इसके साथ ही फुटपाथ पर न तो प्रकाश व्यवस्था के लिए खंभे गाड़े जावे और न ही वृक्ष लगाये जावे तथा न ही खुली नाली हो। वर्तमान में ऐसी अनेक फुटपाथ हैं जिस पर खंभे गड़े हुए हैं, वृक्ष भी लगे हुए हैं एवं खुली नालियाँ भी हैं। इन सभी के कारण फुटपाथ पर दुर्घटना की पूर्ण संभावना बनी रहती है।

जल निकास के साथ फुटपाथ

प्रकाश व्यवस्था के लिए खम्भे एवं वृक्ष फुटपाथ के पास 1.25 से 1.5 फीट चौड़ी पट्टी पर व्यवस्थित रूप से लगाये जाने चाहिये जिससे प्रकाश व्यवस्था सुचारु रूप से हो एवं वृक्ष स्थायी रूप से लगा रहे। कहीं–कहीं पर प्रकाश के लिए दो–दो खम्भें एक स्थान पर अव्यवस्थित रूप से लगे हुए हैं। प्रकाश व्यवस्था हेतु खम्भे एवं छाया हेतु वृक्ष सुनियोजित रूप से लगाये जावे, जिससे भविष्य में उन्हें हटाने की आवश्यकता महसूस नहीं हो। फुटपाथ किनारे वृक्ष यथासंभव एक क्षेत्र में एक जैसी किस्म के लगाये जाने चाहिये जिससे फूल आने वाले मौसम में यह क्षेत्र बहुत सुन्दर एवं समरूप लगे।

फुटपाथ पर विद्युत पोल

फूटपाथ पर विद्युत पोल

बंसियों के साथ फुटपाथ : फतहसागर के अधिकतम् जल भराव क्षमता पर काले किवाड़ से ओवरफ्लो पॉइन्ट के मध्य कहीं–कहीं किनारों पर स्थायी रूप से या लहरों के साथ झील का पानी आ जाता है, जिससे किनारे एवं उससे लगे फुटपाथ धँसने लगते हैं। इसके साथ ही किनारों पर लगी बंसियाँ भी पानी से गिर जाती हैं, जो कि जानलेवा साबित हो सकती है। बंसियों के पास अधिकतम् जल स्तर के ऊपर तटबन्ध पर एक जैसी ऊँचाई पर फुटपाथ बनाने से अधिकतम् भराव क्षमता पर भी पानी सड़क पर नहीं आयेगा एवं बंसियाँ भी सुरक्षित रहेगी।

पाल पर सुन्दर बेन्चें : राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना के अन्तर्गत फतहसागर पाल का आशातीत विकास हुआ। यहां पाल को एक मीटर चौड़ाकर 800 मीटर लम्बाई में एवं सड़क की तरफ अलग–अलग हिस्सों में अनेक तरह की बैन्चें लगाई गई हैं। ये सभी बैन्चें आरामदायक एवं समरूप होनी चाहिये जिससे स्थानीय नागरिक एवं पर्यटक इन पर बैठकर फतहसागर की अपार जलराशि को निहारते हुए आनन्द ले सके। पत्थर आधारित बैन्चों को साफ एवं सुन्दर रखना कठिन हैं क्योंकि इन पर तेलयुक्त खाद्य पदार्थ रखने से चिकनाहट आ जाती है। चिकनाहट को नियमित सफाई से हटाना संभव नहीं है। पाल पर खाने–पीने की वस्तुओं की उपलब्धता, साथ में ले जाने एवं खाने पर पूर्णतया निषेध होना चाहिये।

पाल पर स्थापित विविध प्रकार की बेन्चें

युवाओं का झीलों को स्वच्छ रखने में योगदान : स्थानीय एवं पर्यटक कभी–कभी संतरे के छिलके, प्लास्टिक की बोतलें, पॉलिथीन की थैलियाँ, कागज की प्लेटें, कप आदि झीलों में फैंकते हुए देखे जा सकते हैं। नौजवान इन्हें अनुरोध करें, रोके, बिखरी हुई उक्त वस्तुओं को कचरा पात्र में डाले। नौजवान अपने साथियों को प्रेरणा भी दे। नौजवान के साथ शहर का प्रत्येक नागरिक भी इस झील स्वच्छता अभियान में आहूति दे सकता है। शहर की झीलों के संरक्षण में अब तक युवा जुड़ते रहे हैं, जब कहीं श्रमदान करना हो, जलकुम्भी निकालनी हो तो युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती हैं। लेकिन अब झीलों के विकास के हर बिन्दु से जुड़ने के साथ झीलों को प्रदूषण मुक्त रखने में भी युवाओं को पूरी भागीदारी निभानी चाहिये। युवाओं को झीलों की दशा – सिर्फ जलकुम्भी निकालने और सीवरेज गिरने से रोकने में ही नहीं, वरन् प्राकृतिक जलप्रवाह मार्गों के अवरुद्ध होने, पहाड़ों के कटने, भूजल के दूषित होने, वर्षा जल संरक्षण, अतिक्रमण के निराकरण पर भी पूर्ण गांधीवादी तरीके से ध्यान देना चाहिये।

झीलों को स्वच्छ बनाने में युवाओं के सहयोग हेतु आभार

पम्पिंग स्टेशन का स्थानान्तरण : फतहसागर पाल के अंतिम छोर पर स्थित लोहे की फाटक के पास जलदाय विभाग का पम्पिंग स्टेशन एवं सुविधा कक्ष बना हुआ है। इसके साथ एक पार्क भी विकसित किया गया है। फतहसागर पाल शहरवासियों के भ्रमण तथा पर्यटकों का दर्शनीय एवं पसंदीदा स्थल है। इसकी सुन्दरता में अभिवृद्धि हेतु इस पम्पिंग स्टेशन को देवाली रोड के मोड़ पर (जलदाय विभाग के शुद्धीकरण यंत्र के नीचे) स्थानान्तरित किया जा सकता है। वर्तमान पम्पिंग स्टेशन एवं पार्क पर सुव्यवस्थित पार्किंग स्थल एवं सुविधा कक्ष बनाकर पाल को शहरवासियों एवं पर्यटकों के लिए अधिक आकर्षक बनाया जा सकेगा।

फतहसागर की पाल पर स्थित पम्पिंग स्टेशन

झील के क्षेत्रफल के अनुपात में फव्वारें लगाये जावे : नगर विकास प्रन्यास द्वारा फतहसागर झील की सुन्दरता में अभिवृद्धि के लिए जल सतह पर तैरने वाले कुछ फव्वारें स्थापित किये गये, जो इसकी सुन्दरता में अभिवृद्धि के साथ पानी की शुद्धता, ऑक्सीजन की वृद्धि एवं जलीय जीवों के अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने में सहयोगी सिद्ध हुए हैं, अतः झील के क्षेत्रफल के अनुसार सभी क्षेत्रों में अधिक फव्वारें स्थापित किये जाने चाहिये। इन फव्वारों से झील के पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार के साथ रंग–बिरंगी रोशनी युक्त पानी की बौछारों से झील की सुन्दरता में अतुलनीय वृद्धि होगी। तैरने वाले फव्वारों के स्थान पर जलमग्न फव्वारें स्थापित करने चाहिये, जो कि झील सतह पर अधिक सुन्दर दिखते हैं।

फतहसागर में तैरने वाले फव्वारें

कश्मीर की डल झील में जलमग्न फव्वारें

पानी की सतह पर स्थापित सुन्दर फव्वारें

झील के किनारे सड़क की सतह पर बिछी पानी की पाइपलाइन भूमिगत हो : फतहसागर झील पर्यटकों के मध्य अत्यन्त लोकप्रिय है एवं इसकी सुन्दरता में प्रशासन द्वारा अनेक कार्य किये जा रहे हैं, लेकिन जलदाय विभाग द्वारा फतहसागर झील के किनारे पम्प हाउस एवं काले किवाड़ के पास बिछाई गई पाइपलाइन भूमि सतह से ऊपर निकली हुई है, जो कि अशोभनीय एवं असुविधाजनक है। इन पाइपलाइनों को भूमिगत किया जाना चाहिये।

फतहसागर की पाल को नहाने व गोता लगाने वालों से मुक्त रखा जावे : विरासत में मिली फतहसागर पाल पर एक जैसी आठ छतरियाँ एवं उनसे लगी वॉक–वे वास्तुकला की अनोखी मिसाल है। उदयपुर आने वाला प्रत्येक पर्यटक फतहसागर पाल से इस झील की भव्यता के साथ अण्डर दी सन एक्वेरियम, विभूति पार्क आदि महत्त्वपूर्ण पर्यटक प्वाइंट को देखने अवश्य आता है। शहरवासियों के प्रातःकालीन एवं सांयकालीन भ्रमण हेतु फतहसागर की पाल सबसे पसन्दीदा स्थल है। इस पाल को शहरवासियों के भ्रमण एवं पर्यटकों के लिए आरक्षित रखा जाना चाहिये। यह सत्य है कि पाल की छतरियों के दोनों तरफ छोटे घाट हैं। यहाँ शहरवासी प्रातःकाल नहाने एवं कपड़े धोने के अतिरिक्त तैराकी, गोताखोरी एवं गंद्दे लगाते हुए भी अक्सर दिखते हैं। कतिपय लोगों को नहाने से पूर्व मालिश करते हुए भी देखा जा सकता है। फतहसागर पाल को एक विश्वस्तरीय सुन्दरतम् पर्यटक स्थल के रूप में परिवर्तित करने एवं मेवाड़ के सांस्कृतिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए उक्त क्रिया–कलापों में संलिप्त युवकों एवं वयस्कों को मनाही एवं समझाइश कर इस क्षेत्र को नहाने, तैरने एवं गोता लगाने वालों से मुक्त बनाया जावे। इसी क्रम में फतहसागर के किसी अन्य उपयुक्त स्थल, जहां पर्यटकों की आवाजाही कम हो, यथा छोटी व निचली तलाई को नहाने, तैरने एवं गोताखोरी स्थल के रूप में विकसित कर आरक्षित किया जा सकता है। यहाँ पर दक्ष प्रशिक्षक के मार्गदर्शन में युवा एवं बच्चे तैराकी सीख कर भावी तैराक भी बन सकते हैं। यह शहर के लिए एक सराहनीय कार्य होगा जिससे युवा एवं बच्चों को लेक पेट्रोलिंग के डर से इस स्थल से भागना भी नहीं पड़ेगा।

फतहसागर के रानी रोड छोर पर अविकसित क्षेत्र को विकसित करना : फतहसागर के रानी रोड छोर के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र में कुछ छोटे भू–भाग हैं जिनका उपयोग इस झील के महत्व के अनुरूप नहीं हो रहा है एवं ये क्षेत्र अविकसित दिखते हैं। इनमें मछली आखेट ठेकेदार द्वारा अपनी नावें रखने एवं मछली प्रसंस्करण के लिए उपयोग में लिया जाने वाला क्षेत्र, कुछ विवादाग्रस्त क्षेत्र तथा कुछ क्षेत्र टापू के रूप में है जो भूतल से एक तरफ से जुड़े हुए होने से पशु विचरण करते हुए परिलक्षित होते हैं। इन क्षेत्रों का विकास झील की सुन्दरता में अभिवृद्धि के साथ अतिक्रमण मुक्त रखने के लिए भी अति आवश्यक है। नगर विकास प्रन्यास एवं सिंचाई विभाग इस क्षेत्र के विवाद को अविलम्ब सुलझा कर इसे विकसित करें या इसकी मिट्टी का उपयोग कर इस क्षेत्र को झील में मिला देवें जिससे भविष्य में पुनः कोई अतिक्रमण या विवाद नहीं हो सके। इससे झील की जल भण्डारण क्षमता में वृद्धि हो सकेगी। टापुओं को पूर्ण रूप से प्राकृतिक टापू बनाने का प्रयास किया जाना चाहिये, जिसके अन्तर्गत इनके चारों तरफ पानी ही रहे एवं ये भूमि तल से पूर्णतः जुड़ाव मुक्त हो। इन टापुओं के किनारों पर मछलियाँ अपने अण्डे देकर अपनी संख्या में निर्बाध वृद्धि कर सकेगी। साथ ही ये स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों के लिए विश्राम, आवास एवं प्रजनन के लिए उपयुक्त स्थल सिद्ध होंगे। फतहसागर झील के पानी को स्वच्छ एव पक्षियों के अनुकूल रखने हेतु इसे मछली आखेट निषेध क्षेत्र भी घोषित किया जाना चाहिये।

इस क्षेत्र को झील में सम्मिलित कर देना चाहिये।

इन ऊंचे नीचे टापुओं को प्राकृतिक टापुओं के रूप में विकसित किया जाना चाहिये।

झील में अनियोजित निर्माणों पर रोकथाम हो : फतहसागर झील की सुन्दरता में अभिवृद्धि, पक्षियों एवं जानवरों के अनुकूल प्रशासन ने कतिपय निर्माण करवाये। उनमें से कुछ निर्माणों का सूक्ष्मता से अध्ययन करें तो वे अनियोजित प्रतीत होंगे। इनकी संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है :–

निचली तलाई के पश्चिमी छोर पर वॉक–वे : निचली तलाई के पश्चिमी छोर पर पहाड़ से सटे हुए कच्चे वॉक–वे का निर्माण इस तलाई को गहरा करते समय किया गया। इस निर्माण से यहाँ पर आमजन एवं पालतू जानवरों की गतिविधियाँ बढ़ेगी तथा इससे इस तलाई से सटी पहाड़ी के वन क्षेत्र के छोटे–बड़े जंगली जानवर एवं रेप्टाइल्स वर्ग के जीव आदि इस तलाई के पानी को पीने के लिए आते हुए स्वाभाविक रूप से डरेंगे। इसके अतिरिक्त इस निर्माण से झील पर अतिक्रमण की संभावना में भी वृद्धि हो जायेगी। यह निर्माण किसी भी प्रकार से झील हित में प्रतीत नहीं हो रहा है।

निचली तलाई के पूर्वी छोर पर पक्का वॉक–वे : निचली तलाई के पूर्वी छोर पर कुछ वर्षों पूर्व कम चौड़ाई का पक्का वॉक–वे वरिष्ठ नागरिकों एवं पर्यटकों के भ्रमण हेतु बनाया गया। इस वॉक–वे को समान समोच्च रेखा पर नहीं बनाने से वरिष्ठ नागरिकों के भ्रमण के लिए यह पूर्णतः असुविधाजनक है। इसके अतिरिक्त यह वॉक–वे तलाई में पीलर बनाकर बनाया गया है। यदि इसे सड़क के समोच्च तल पर संतुलित ब्रैकट (Cantilever) तरीके से बनाया जाता तो यह समरूप दिखता, वरिष्ठजनों के भ्रमण की दृष्टि से भी अधिक सुविधाजनक होता एवं निर्माण तल के नीचे खरपतवार, जलीय घास, काई आदि के प्रसारित होने की संभावना भी कम हो जाती। पूर्वी एवं पश्चिमी फतहसागर मुख्य छोर पर बनी नालियों का जल निकास भी इस तलाई में किया गया है। इससे इस तलाई के प्रदूषित होने की पूर्ण संभावना है।

दर्शनीय रानी रोड के किनारे अस्थायी आवास सुविधा क्यों : रानी रोड़ के पश्चिमी छोर पर उपलब्ध एक लघु क्षेत्र पर अस्थायी आवासीय सुविधा की स्वीकृति देना किसी भी रूप में उचित नहीं है। इससे इस क्षेत्र की सुन्दरता में कमी के साथ पक्षियों के सुगम प्रवास में मानवीय हस्तक्षेप होने से विपरीत प्रभाव पड़ता है। यह अस्थायी आवास कब स्थायी हो जाये एवं यह भूमि भी कब अतिक्रमण ग्रस्त हो जाये, यह कहा नहीं जा सकता। इससे भविष्य में विवाद उत्पन्न हो सकते हैं, जो इस झील के हित में नहीं होगा।

सीमेन्ट कंकरीट स्लेब के बजाय पक्की फुटपाथ बनानी चाहिए : देवाली अंतिम छोर से रानी रोड के चारों ओर पहाड़ों से आने वाला जल या गन्दगी के निस्तारण के लिए राष्ट्रीय झील संरक्षण परियोजना के अन्तर्गत सीमेन्ट–कंकरीट के स्लेब से ढकी हुई नाली का निर्माण किया गया। जल निस्तारण का अंतिम छोर कहां होगा एवं कहां ले जाया जायेगा? वर्तमान में इस नाली का जल निचली तलाई में डाला जा रहा है, क्या इससे झीलें प्रदूषित नहीं होगी? इस ढकी हुई नाली के स्थान पर व्यवस्थित रूप से अच्छी फुटपाथ जल निकास युक्त बनाई जाती तो उत्तम रहता। पैदल पर्यटक इस पर सुरक्षित रूप से चल सकते। प्रत्येक कार्य का नियोजन उच्च स्तर, दूरदृष्टि एवं उपयोगिता के आधार पर करना चाहिये।

पक्षियों के लिए टापुओं का निर्माण : फतहसागर के पश्चिमी छोर पर स्थित रानी रोड के पास सौर वेधशाला के आगे, स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों को सुविधाजनक पारिस्थितिकी तंत्र उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मिट्टी के कुछ कृत्रिम टापू बनाये गये हैं। इनका निर्माण करते समय इनकी यथोचित ऊँचाई, आकार, दूरी आदि का समुचित ध्यान नहीं रखा गया है। कुछ टापुओं की ऊँचाई झील की अधिकतम् जल क्षमता के बराबर रखने से ये पानी में डूबते हुए दिखते हैं एवं कुछ टापुओं की दूरी तो नगन्य–सी है। इसके अतिरिक्त एक बड़ा टापू तो रानी रोड़ से लगे भूमि तल के पास ही निर्मित किया गया है। इससे मानवीय हस्तक्षेप के चलते पक्षियों के विचरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। पक्षियों के सुगम प्रवास के लिए टापू बनाना महत्त्वपूर्ण है, लेकिन इनका निर्माण पक्षी विशेषज्ञों की सलाह एवं झील क्षेत्र की आवश्यकतानुसार किया जाता तो अधिक उपयुक्त होता। छिछले क्षेत्र में बने टापुओं हेतु वहीं से मिट्टी लेना उचित नहीं होकर अन्य गहरे क्षेत्र से लानी चाहिये थी।

झीलों की नियमित सफाई अत्यावश्यक : फतहसागर झील तंत्र की सफाई उसी प्रकार से की जानी चाहिये जिस प्रकार से शहर की कॉलोनियों अथवा मोहल्लों में की जाती है। एक या एक से अधिक सफाईकर्मी को एक निश्चित क्षेत्र की सफाई के लिए जिम्मेदारी दी जानी चाहिये। फतहसागर झील तंत्र की सभी झीलों की यही व्यवस्था होनी चाहिये। सफाई कार्य रात्रिकालीन समय में करने के अतिरिक्त पौधों की क्यारियों या कूड़ेदान में कचरे की सफाई भी उसी कर्मचारी द्वारा करवाने की जिम्मेदारी सुनिश्चित की जानी चाहिये। यह व्यवस्था वर्तमान में नहीं है। पाल की छतरियों वाले तट पर पानी की सतह पर प्रायः प्लास्टिक बोतलें, कप, थैलियाँ, कागज के टुकड़े, भुट्टे के अवशेष, काई आदि के साथ जलीय घास, खरपतवार, जलकुंभी आदि तैरती रहती हैं। इस क्षेत्र की नियमित रूप से प्रतिदिन सफाई व्यवस्था होनी चाहिये। वर्तमान में झील की सफाई ठेके की प्रथा के अन्तर्गत अनुबन्धित श्रमिक द्वारा की जाती है, जिससे झील की नियमित सफाई नहीं होती है। देशी–विदेशी पर्यटकों, स्थानीय नागरिकों को गन्दगी डालने पर विनम्रतापूर्वक या दण्ड द्वारा रोका जाना चाहिये। फतहसागर झील तंत्र के सर्वोत्तम एवं व्यवस्थित साफ–सफाई के लिए नगर विकास प्रन्यास एवं नगर निगम के मध्य समुचित तालमेल की आवश्यकता है।

"नो प्लास्टिक जोन" घोषित हो : फतहसागर झील क्षेत्र को "नो प्लास्टिक जोन" घोषित कर रखा है जो कि कहने मात्र तक सीमित है। झील किनारे साफ–सफाई के दौरान बड़ी मात्रा में प्लास्टिक का कचरा निकलता है। नो प्लास्टिक जोन घोषित होने के बावजूद झील किनारे संचालित दुकानों पर प्लास्टिक पैक्ड खाद्य पदार्थों की बिक्री धड़ल्ले से हो रही हैं। प्लास्टिक पैक्ड खाद्य सामग्री खरीदकर शहरवासी एवं पर्यटक, विशेषकर युवा वहीं झील किनारे बंसियों पर बैठकर खाने का आनन्द लेते हैं और फिर खाली पैकेट को कूड़ेदान में न डालकर अपने पैरों में फेंक देते हैं या वहीं छोड़ देते हैं। यही प्लास्टिक हवा के संग उड़ते हुए झील में जा गिरता है जो पानी को प्रदूषित करता है। ऐसे युवकों को विनम्रतापूर्वक आग्रह करने की हिम्मत झील हितैषियों को दिखानी चाहिये। यही नहीं, झील किनारे प्लास्टिक कप, कोल्ड ड्रिंक व बीयर की

बोतलें भी पानी की सतह पर तैरती हुई मिलती हैं। मानसून में तो लोग बारिश के साथ मक्का के भुट्टे खाने का आनन्द भी झील किनारे लेते हैं और भुट्टे के दाने खत्म होने पर शेष बचे ठूंठे–डूंड़ियों को भी अक्सर झील में फेंक देते हैं। मुम्बइया बाजार की दुकानों या थैले वालों के पास प्लास्टिक पैक्ड खाद्य सामग्री बिकेगी ही नहीं तो खरीदने वाले क्या खरीदेंगे और खाने के बाद क्या झील किनारे या झील में फेंकेंगे। प्रशासन की सख्ती और दुकानदारों के सहयोग से झील को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है।

काले किवाड़ से ओवरफ्लो स्थल तक 'नो व्हीकल जोन' घोषित हो : फतहसागर झील किनारे जहाँ प्रतिदिन हजारों देशी–विदेशी पर्यटक घूमने के लिए पहुँचते हैं। शाम होने के साथ–साथ शहरवासियों की संख्या भी यहाँ बढ़ने लगती हैं। इनमें कई परिवार अपने छोटे बच्चों को भी खुली हवा में घुमाने के लिए साथ में लाते हैं। लेकिन वे बच्चों को दौड़ने एवं खेलने–कूदने के लिए झील किनारे खुला नहीं छोड़ सकते, क्योंकि उन्हें हमेशा अपने बच्चों के तेज रफ्तार से दौड़ती बाईक, कार आदि की चपेट में आने का भय सताता रहता है। ऐसे में वे बच्चों के हाथ थामें सदैव असहज ही बने रहते हैं। झील किनारे शाम को तेज दौड़ते वाहनों की गति पर नियंत्रण रखने के साथ इन पर व्यस्ततम् समय में पाबन्दी लगाई जाये। काले किवाड़ से ओवरफ्लो एवं मुख्य पाल को प्रातः 10 बजे से सायं 10 बजे या अपराह्न 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक के लिए इस क्षेत्र को 'नो व्हीकल जोन' घोषित किया जाना चाहिये। इससे झील क्षेत्र के वातावरण को प्रदूषित होने से बचाने के साथ ही छोटे–छोटे हादसों पर भी नियंत्रण हो सकेगा। झील किनारे पर्यटकों के आनन्दमय भ्रमण के लिए उनके वाहनों की समुचित पार्किंग के साथ विशेषकर वरिष्ठ नागरिक, विकलांग, बच्चों आदि के लिए न्यूनतम दर पर सोलर बेट्री/बेट्री चालित गोल्फ कार एवं युवकों/वयस्कों के लिए साइकिलें भी उपलब्ध होनी चाहिये। इससे देशी–विदेशी पर्यटक प्रकृति की इस अतुलनीय झील की सुन्दरता एवं विशालता के दर्शन के साथ अनेक दर्शनीय स्थलों के भ्रमण का भरपूर आनन्द ले सकेंगे। साथ ही दुर्घटना के भय से भी मुक्त रह सकेंगे एवं प्रतिदिन लगने वाले जाम से भी निजात पा सकेंगे।

फतहसागर पर पार्किंग व्यवस्था एवं खाद्य सामग्री की उपलब्धता : फतहसागर उदयपुर की एक ऐसी सुन्दरतम् झील है जिसके चारों ओर सड़क है, पूर्ण क्षेत्र प्रकाशमय है तथा अनेक दर्शनीय स्थल यथा मेवाड़ दर्शन दीर्घा, फतह पार्क, प्रताप स्मारक, मोती मगरी, विवेकानन्द पार्क, गुरु गोविन्द सिंह पार्क, नेहरू पार्क, ओवरफ्लो स्थल, अण्डर दी सन एक्वेरियम, सहेलियों की बाड़ी, विभूति पार्क, नीमच माता मन्दिर, उदयपुर सौर वेधशाला, प्रताप गौरव केन्द्र, शिल्पग्राम, फतहसागर पक्षी स्थल, राजीव गाँधी पार्क, संजय गाँधी पार्क, बोलार्ड पार्क, सुन्दर संरचनाएँ, श्री महाकालेश्वरजी मन्दिर आदि से घिरी हुई है। इसके अतिरिक्त फतहसागर पाल पर अनेक कार्यक्रम यथा–फ्लॉवर शो, चित्रकारी/हस्तकला प्रदर्शनी, लेक फेस्टिवल, हरियाली अमावस्या मेला, राष्ट्रीय एकता कार्यक्रम, देश की सुरक्षा हेतु प्रयुक्त हथियारों की प्रदर्शनी, वाटर स्पोर्ट्स आदि वर्ष भर में समय–समय पर आयोजित किये जाते हैं। प्रत्येक पर्यटक इसे देखें बिना उदयपुर नहीं छोड़ता है। अनेक दर्शनीय स्थल एवं कार्यक्रमों के साथ मोती मगरी प्रवेश स्थल, गुरु गोविन्द सिंह पार्क एवं मुम्बईया बाजार के किनारों पर पानी में उतारी गई जेटियों से हजारों पर्यटक प्रतिदिन बोटिंग करते हैं। इन्हीं क्षेत्रों पर पर्यटकों एवं शहरवासियों के सैकड़ों चार पहिया एवं दो पहिया वाहन भी पार्क होते हैं। साथ ही यहाँ स्थित थैले एवं केबिन से इन्हें आवश्यक खाद्य पदार्थ उपलब्ध होते हैं।

इस झील को सुन्दर बनाने एवं दर्शनीय स्थल विकसित करने में करोड़ों रुपये खर्च किये गये, लेकिन न तो वाहन पार्किंग और न ही शुद्ध खाद्य सामग्री की उपलब्धता की कोई विशेष व्यवस्था की गई है। इस ओर निम्नांकित बिन्दुओं पर झील के विकास के साथ समुचित ध्यान दिया जाना आवश्यक हैं :–

- फतहसागर प्रवेश अर्थात् काले किवाड़ के चौराहे के पास दी ललित लक्ष्मी विलास होटल के नीचे की भूमि (Untitled) को हाल ही में उद्यान के रूप में विकसित कर सुन्दर गेट बनाकर होटल के मुख्य भवन से रोड बनाकर चौराहे तक जोड़ा गया है। लेकिन प्रशासन ने इसके उपयोग की स्वीकृति प्रदान नहीं की है। यदि नगर विकास प्रन्यास इस होटल क्षेत्र को अधिगृहीत कर सके तथा यह संभव नहीं हो तो इसके आगे मोती मगरी क्षेत्र भी है। इन दोनों संभावित क्षेत्रों में से किसी एक पर पूर्ण नियोजन के साथ उच्च स्तरीय ग्रीन पार्किंग, व्यवस्थित फूड हब एवं सुलभ सुविधायुक्त परिसर विकसित किया जाना चाहिये। इससे फतहसागर की पाल तक पर्यटकों का आवागमन निर्बाध रूप से हो सकेगा एवं व्यस्ततम् समय में काले किवाड़ से ओवरफ्लो स्थल तक का क्षेत्र को 'नो व्हीकल जोन' घोषित किया जा सकेगा।

- फतहसागर के काले किवाड़ से देवाली छोर तक मुम्बईया बाजार इस झील तंत्र का एक मात्र फूड हब है। वर्तमान में मुम्बईया बाजार में सभी सावधानियों के बाद भी झील में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से गन्दगी डाली जाती रही है। यह इस क्षेत्र के जल एवं वायु के नमूने के परीक्षण से सिद्ध हो सकती है। मुम्बईया बाजार फूड हब को मोती मगरी के भामाशाह बगीचे में स्थानान्तरित कर दिया जाना चाहिये, जहाँ वर्तमान में केबिन के स्थान पर आधुनिक सुविधायुक्त स्थायी रेस्टोरेन्ट हो, मध्य में सुन्दर उद्यान जो प्रदूषणरहित हो एवं प्रदूषित जल निस्तारण की भी समुचित व्यवस्था हो। सुलभ कक्ष के साथ शुद्ध पेयजल की सुविधा हो, जिससे पर्यटक इस सुन्दर झील का पैदल भ्रमण कर अपनी संपूर्ण खाद्य आवश्यकताओं को सुगमता से प्राप्त कर सके। इस बाजार के उक्तानुसार स्थानान्तरण से वर्तमान व्यवसायियों को भी किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं होगा। इसके फलस्वरूप उदयपुर आने वाले पर्यटकों को काफी सुविधा मिलेगी तथा यह झील वर्षों तक अपनी प्राकतिक सुन्दरता पर्यटकों की वृद्धि के साथ बनाये रख सकेगी।

• फतहसागर के देवाली छोर के अंतिम भू–भाग एवं नीमच माता मन्दिर के नीचे के क्षेत्र पर राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर का एक कार्यालय एवं छात्रावास स्थित है। इसे सहेलियों की बाड़ी के सामने स्थित इस संस्था के मुख्य प्रशिक्षण भवन में स्थानान्तरित कर इस स्थल पर अति आधुनिक मल्टी स्टोरी वाहन पार्किंग, फूड हब एवं सुलभ व्यवस्था विकसित की जानी चाहिये। पार्किंग व्यवस्था में बस पार्किंग एवं बस के पर्यटकों को सुलभ सुविधा के साथ चाय–नाश्ते एवं भोजन की व्यवस्था हेतु आधुनिक रेस्टोरेन्ट हो। संस्था के वर्तमान कार्यालय एवं छात्रावास को भी डोरेमेटरी एवं आवास व्यवस्था के लिए पीपीपी मोड पर संचालित किया जा सकता है। यहाँ से भी नीमचमाता व सज्जनगढ़ तक एक रोप–वे पीपीपी मोड़ पर विकसित किया जा सकता है। रा.रा.शै.अ.प्र. संस्थान के पास से 12 ट्रोली युक्त 400 मीटर लम्बा रोप–वे बनाये जाने का प्रस्ताव है। इसका लोडर स्टेशन संस्थान के पास एवं अपर स्टेशन नीमच माता मन्दिर पर बनेगा। इस रोप से 72 व्यक्ति एक साथ एवं 600 व्यक्ति प्रति घंटा यात्रा कर सकेंगे। शहर का यह दूसरा रोप–वे होगा। इससे इस क्षेत्र में पर्यटकों की सुविधा के साथ क्षेत्र की भव्यता में भी आशातीत वृद्धि हो सकेगी।

• इस प्रकार काले किवाड़ से देवाली छोर तक पर्यटक एवं शहरवासी पैदल, साइकिल या प्रदूषण रहित बेट्री चालित वाहनों (गोल्फ कार) से सुगमतापूर्वक भ्रमण कर सकेंगे। समुचित पार्किंग, आधुनिक फूड हब, सुलभ सुविधा कक्ष आदि विकसित होने से संपूर्ण फतहसागर झील तंत्र को स्वच्छ, सुन्दर, प्रदूषण एवं जामरहित बनाना संभव हो सकेगा तथा यह कार्य पर्यटक हितैषी सिद्ध होगा।

फतहसागर पाल, मुख्य मार्ग, ट्री–गार्ड पोस्टर एवं भराव मुक्त हो : फतहसागर पर इसकी पाल, मुख्य मार्ग, ट्री–गार्ड, दीवारों पर चित्रकारी, कुर्सियों/बेन्चों पर पोस्टर्स आदि अज्ञात लोगों द्वारा रात्रिकालीन समय में चिपका दिये जाते हैं, जो इसकी सुन्दरता पर प्रतिकूल प्रभाव ड़ालते हैं। बाद में नगर निगम या नगर विकास प्रन्यास द्वारा श्रमिक लगवाकर इन्हें हटवाया जाता है। इसके अतिरिक्त झील किनारों एवं मुख्य मार्गों के आसपास भराव भी डाल दिया जाता है। इस प्रकार की गतिविधियों पर निगरानी रखने के लिए पुलिस की अच्छी गश्त व्यवस्था होनी चाहिये तथा इस प्रकार का कार्य करने वाले लोगों पर भारी जुर्माने के साथ कठोर दण्ड का प्रावधान किया जाना चाहिये।

वाटर स्पोर्ट्स के लिए उपयुक्त स्थल : फतहसागर झील तंत्र में फतहसागर की पाल, नेहरू पार्क, उत्तरी सौर वेधशाला के मध्य जल सतह वाटर स्पोर्ट्स के लिए उपयुक्त स्थल है। इसी क्षेत्र के रानी रोड छोर पर उपयुक्त स्थान का चयन कर वहाँ जेटी बनाकर एन.सी.सी. नेवी विंग का प्रशिक्षण स्थल जो कि मोती महल के पास स्थित है, यहाँ से स्थानान्तरित किया जा सकता है। यहाँ नावों को ठहराने के साथ अच्छी जेटी से प्रशिक्षण सुचारु रूप से आयोजित किया जा सकता है। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय एवं राजस्थान क्रीड़ा परिषद् द्वारा राजस्थान कयाकिंग एवं कैनोइंग एसोसिएशन को 40 महंगी कयाकिंग एवं कैनोइंग नौकाएँ भेंट की गयी। इन्हें वर्तमान में फतहसागर पाल पर खुले स्थान पर स्टेक की जाती हैं। उपयुक्त भण्डारण स्थल के अभाव में इन्हें सही अवस्था में सुरक्षित रखना एसोसिएशन के लिए कठिन है। एसोसिएशन द्वारा नगर विकास प्रन्यास से रानी रोड़ छोर पर भूमि उपलब्ध करवाने का प्रयास किये जाने चाहिये जिससे इन महंगी नावों के समुचित भण्डारण के साथ ही स्थानीय युवक/युवतियों को इन नावों पर प्रशिक्षण देने के अतिरिक्त राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर की कयाकिंग एवं कैनोइंग प्रतियोगिता प्रतिवर्ष आयोजित की जा सकेगी।

उदयपुर में पर्याप्त जल संसाधन होने के बावजूद वाटर एडवेन्चर स्पोर्ट्स और तैराकी एकेडमी का गठन अभी तक नहीं हुआ है, जिससे यह शहर इस क्षेत्र में पिछड़ रहा है। राजस्थान क्रीड़ा परिषद् द्वारा इस एकेडमी का गठन शीघ्र किया जाना चाहिये एवं दोनों संस्थाएँ मिलकर बड़ी तालाब, फतहसागर, उदयसागर एवं जयसमन्द को वाटर एडवेन्चर स्पोर्ट्स हब के रूप में विकसित कर सकती हैं।

लेकसिटी में पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए फतहसागर झील में (पाल, नेहरू गार्डन एवं सोलर वेधशाला के मध्य) में सुरक्षा के समुचित उपाय करते हुए वाटर स्पोर्ट्स प्रारम्भ करने चाहिये। वर्तमान में तीन स्थानों से झील में नाव संचालन–स्पीड बोट/स्कूटर आदि का संचालन हो रहा हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि महानगर एवं विदेशों की तर्ज पर यहाँ पर भी तरह–तरह के वाटर स्पोर्ट्स का संचालन किया जा सकता है।

नियंत्रित क्षेत्र में स्पोर्ट्स मोटर बोट्स, स्पीड स्कूटर चालन प्रशिक्षण/प्रतियोगिता के साथ अन्य एडवेन्चर यथा वाटर बॉल आदि पर्यटकों को आकर्षित करेंगे। वाटर स्पोर्ट्स से पर्यटन व्यवसाय को प्रोत्साहन मिलने के साथ पानी के लगातार हिलोरें मारने से ऑक्सीजन की अधिक उपलब्धता से पानी स्वच्छ बना रहेगा।

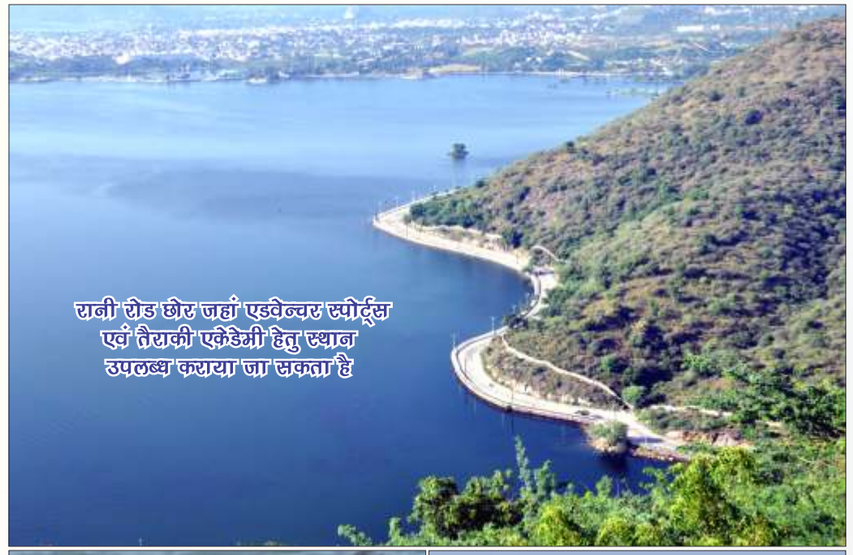

वाटर स्पोर्ट्स

फतहसागर पर सुरक्षा व्यवस्था : फतहसागर उदयपुर का एक मुख्य पर्यटक स्थल है। पर्यटकों एवं शहरवासियों की सुरक्षा एवं निगरानी के लिए सी. सी.टी.वी. कैमरों को निश्चित दूरी पर लगाने के साथ एक कन्ट्रोल रूम स्थापित किया जाना चाहिये। इस हेतु फतहसागर को सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिकोण से तीन मुख्य भागों में बांटा जा सकता हैः– (1) फतहसागर पाल, (2) मुम्बईया बाजार–प्रताप स्मारक मोती मगरी–काला किवाड़–दी ललित लक्ष्मी विलास होटल एवं (3) देवाली मोड़–राजीव गाँधी पार्क–संजय पार्क–बोलार्ड पार्क– श्री महाकालेश्वर मन्दिर।

इन सभी हिस्सों के मार्ग पर भारी वाहनों की आवाजाही पूर्णतया निषेध होनी चाहिये। यहाँ पर तीसरी आँख यानी सीसीटीवी कैमरों से कन्ट्रोल रूम में उन पर समुचित निगरानी हो। सुरक्षा के लिए सुरक्षाकर्मियों की व्यवस्था हो। इन क्षेत्रों में ऊँचे वॉच टावर भी लगाये जावे ताकि पर्यटन समय के दौरान सुरक्षा गार्ड तैनात हो सके। इन क्षेत्रों में लगे सीसीटीवी कैमरों से झील में गन्दगी डालने वाले, तेज रफ्तार से वाहन चलाने वाले, प्लास्टिक थैलियों में खाद्य सामग्री बेचने, खाने व झील में डालने वाले, झील में भुट्टे के अवशेष, प्लास्टिक की बोतलें, प्याले आदि डालने वाले, बिना लाइफ जैकेट पहने नाव में सवारी करने वाले, बंसियों पर चलने वाले, अशोभनीय व्यवहार करने वाले आदि भी इनकी नजर से बच नहीं सकेंगे एवं रिकोर्डेड जानकारी से इन पर दण्डात्मक कार्यवाही सहजता से की जा सकेगी।

फतहसागर पर जेटियाँ एवं उनका रखरखाव : फतहसागर के तीन स्थलों – मोती मगरी प्रवेश द्वार, गुरु गोविन्द सिंह पार्क एवं मुम्बईया बाजार से नौकायन व्यवस्था ठेके पर संचालित है। मुम्बईया बाजार की तरफ उतारी गई 8 × 4 मीटर की जेटी नगर विकास प्रन्यास द्वारा बनाई गई है, जो स्टेण्डर्ड मापदण्ड के अनुरूप बनी हुई है। इस जेटी से नौकायन करने वाले लोग जेटी तक 12 मीटर के गैंग–वे (पूल) से होकर गुजरते हैं। इसके आगे जेटी है यानी सड़क से 12 मीटर से अधिक दूरी पर पानी में नावें खड़ी की जा रही हैं। झील में पानी का लेवल नीचे गिरने पर यह जेटी ऑटोमेटिक ही नीचे हो जाती है और लेवल बढ़ने के साथ ऊपर आ जाती है। नावें रात में झील के किनारे से दूर लंगर डालकर खड़ी की जानी चाहिये। जेटी एवं नावों के चारों ओर के किनारों की स्वच्छता एवं सफाई की पूर्ण जिम्मेदारी नाव संचालक एजेन्सी की होनी चाहिये। क्योंकि झील के किनारे भूमि, जल एवं वायु के मध्य की एक महत्त्वपूर्ण पर्यावरणीय सीमा है। किनारों से झील की जैविक क्रियाएँ संचालित होती हैं। कई सूक्ष्म पादप व जैविक जीवन के लिए किनारों पर न्यूनतम् गतिविधियाँ हो। सूर्य की रोशनी की उपलब्धता व प्राकृतिक हवा के प्रवाह के रुकने से किनारे एक जीवित इकाई के स्थान पर मृत इकाई के रूप में कार्य करने लगते हैं, जिसका नुकसान झील को होता है। सभी जेटियाँ इसी स्टेण्डर्ड मापदण्ड के अनुरूप बनाई जानी चाहिये।

सभी नावों के लाइसेंस व फिटनेस की जांच के अलावा अनुबंध शर्तों की पूर्ण पालना करवाना जरूरी है। सभी नावों पर उनकी क्षमता से भी अधिक संख्या में साफ एवं स्टेण्डर्ड मापदण्ड के अनुरूप जीवन सुरक्षा जैकेट्स होने चाहिये। इसके अतिरिक्त प्रत्येक जेटी पर एक सुरक्षा नाव मय समस्त आवश्यक उपकरण एवं एक प्रशिक्षित गोताखोर की सेवाएं सदैव उपलब्ध रहनी चाहिये।

पाल एवं वॉक–वे : फतहसागर पाल की छतरियों के साथ बने वॉक–वे के नीचे लोहे की जाली से सुरक्षित सुन्दर पौधों की क्यारियां बनी हुई हैं, जिनमें विभिन्न प्रजातियों के उथली जड़ वाले पौधे लगाये गये हैं। इन पौधों की सघनता, कटाई व छंटाई के साथ रखरखाव एवं सफाई व्यवस्था भी समुचित नहीं है। इनमें समरूपता की कमी भी है। इन क्यारियों के निर्माण के मूल उद्देश्य सुन्दरता अभिवृद्धि हेतु इन पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता हैं। इनके अतिरिक्त हाल ही में मूसला जड़ युक्त पौधे क्यारियों के किनारे एवं मध्य में लगाये गये हैं। ये पौधे मुख्य पाल को नुकसान पहुंचाने के साथ पर्यटकों के मध्य दृष्टि अवरुद्धता भी उत्पन्न करेंगे।

इन क्यारियों के मध्य एक या दो डस्टबीन भी स्थापित किये गये हैं, जो क्यारियों की सुन्दरता बिगाड़ रहे हैं। इनकी नियमित सफाई के अभाव के साथ इनके नीचे कचरा पसरा हुआ देखा जा सकता है। इनकी समुचित सफाई हेतु डस्टबीन एवं क्यारियों के कचरे की सफाई का कार्य एक ही सफाईकर्मी के पास होना चाहिये।

Various plant types planted in above Beds :

Shallow root system –
- **Duranta repens (Golden duranta)**
- **Clerodendrum inerme (Kadvi Mehndi**
- **Hibiscus rosa-sinensis (Green china rose)**
- **Thevetia yellow (Kaner)**

Tap root system –
- **Cupressus chinensis (Pencil palmae**
- **Livistona rotundifolia (Table palmae)**

Cupressus chinensis

मुख्य पाल पर आवारा कुत्ते : फतहसागर मुख्य पाल पर एक दर्जन से अधिक आवारा कुत्ते दिन–रात विचरण करते रहते हैं। इन्हें भ्रमणकर्त्ता, शहरवासी, पर्यटकों आदि द्वारा ब्रेड, रोटी, बिस्कीट आदि खिलाते हुए देखा जा सकता हैं। इन्हें कभी कुर्सियों के ऊपर बैठे हुए, तो कभी एक–दूसरे के साथ भागते या लड़ते हुए देखा गया हैं। इसके साथ ही वे शौच विसर्जन भी मुख्य पाल, कुर्सियों एवं सड़क पर ही करते रहते हैं। प्रातः 4 से 6 बजे के दौरान भ्रमण पर आने वाले लोग यहाँ फिसलते–गिरते रहते हैं। कुछ कुत्तों ने भ्रमणकर्त्ताओं को शारीरिक क्षति भी पहुँचाई हैं। इस पर्यटक स्थल पर भ्रमणकर्त्ताओं की सुरक्षा को सुनिश्चित करते हुए नगर विकास प्रन्यास द्वारा इन कुत्तों को किसी दूसरे स्थान या जंगल में छोड़ने की नियमित व्यवस्था की जावे ताकि प्रातःकालीन भ्रमण पर आने वाले आमजन फतहसागर के स्वच्छ वातावरण का आनन्द ले सकें।

अव्यवस्थित कचरापात्र : फतहसागर की मुख्य पाल के नीचे सुन्दर पौधों की क्यारियाँ बनी हुई हैं। इन क्यारियों के मध्य या किनारे पर गिला एवं सूखा कचरा डालने के लिए प्लास्टिक के कचरापात्र स्थापित किये गये हैं। इनसे कचरा निकालने की सुचारु व्यवस्था नहीं होने से कचरा बीनने वाले लोग प्लास्टिक की थैलियाँ, बोतलें आदि एकत्रित करने के उपरान्त शेष कचरा इन क्यारियों में ही बिखेर जाते हैं। इन कचरापात्रों के स्थान पर क्यारियों में निश्चित स्थान की दूरी पर दो प्रकार के बिना ढ़क्कन के स्टील के कचरापात्र स्थायी रूप से स्थापित किये जावे ताकि प्रतिदिन प्लास्टिक की थैलियाँ उसके अन्दर लगाई जा सके एवं सफाईकर्मी इसे आसानी से कचरे के साथ हटा सके। साथ ही नियमित सफाईकर्मी के माध्यम से ही उक्त कचरा हटाने की व्यवस्था की जानी चाहिये। कचरा निस्तारण की सुचारु व्यवस्था के उपरान्त ही पाल एवं सड़क स्वच्छ एवं सुन्दर नजर आयेगी, जो पर्यटकीय दृष्टि से अति आवश्यक है।

पाल की सड़क पर नाली के साथ अव्यवस्थित विद्युत केबल : फतहसागर पाल की मुख्य सड़क के पूर्वी छोर की सड़क के समानान्तर ही एक गहरी नाली का निर्माण कर उस पर लोहे की जाली लगाई गई है जिससे वर्षा जल का निस्तारण सुचारु रूप से होता है लेकिन वर्ष भर इसमें मिट्टी, गुटखे के पाउच, पौधों की पत्तियाँ, प्लास्टिक की थैलियाँ आदि पर्यटक, शहरवासी एवं सफाईकर्मियों के द्वारा डालते हुए प्रायः देखा गया है। इस कचरे की कभी भी सफाई नहीं की जाती है। इस नाली में पाल पर स्थापित विद्युत पोल हेतु विद्युत केबल भी लोहे की जाली के साथ ही बिछा दी गई है, जो कि सुरक्षा की दृष्टि से कतई सही नहीं है। नगर विकास प्रन्यास द्वारा इस नाली में डाली गई केबल को हटाकर इसे सुचारु रूप से बाहर की तरफ से बिछाई जानी चाहिये ताकि इस महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल पर किसी दुर्घटना के घटित होने की संभावना नहीं रहे। उक्त नाली से सप्ताह में कम से कम एक बार कचरा, मिट्टी आदि के निस्तारण हेतु सफाईकर्मियों की जिम्मेदारी सुनिश्चित की जानी चाहिये। नाली की नियमित सफाई इस पर्यटक स्थल की सुन्दरता को बनाये रखने हेतु आवश्यक है।

अव्यवस्थित विद्युत पोल : फतहसागर की मुख्य पाल एवं सड़क पर की गई प्रकाश व्यवस्था एवं संगीत प्रसारण के लिए लगाये गये पोल तथा उनके साथ विद्युत केबल कनेक्शन को इस मुख्य पर्यटक स्थल के अनुरूप सुव्यवस्थित रूप से स्थापित नहीं किया गया है। पाल पर अलग–अलग प्रकार के पोल के साथ विभिन्न तरह की केबलिंग की गई हैं। ये समस्त पोल समरूप होने से इस पर्यटक स्थल की सुन्दरता में आशातीत वृद्धि संभव होगी। यहां सोलर लाइटें लगाने का भी प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त मुख्य पाल पर लगे पोल की वायरिंग कन्ड्यूट पाइप के साथ आउटर साइड में की गई है, जिसे मात्र तीन वर्षों में ही परिवर्तित करना पड़ा है। उक्त समस्त कार्यों को दूरदृष्टिता, सुव्यवस्थित एवं स्थायी परिकल्पना के साथ करवाया जाना आवश्यक है।

पाल की मुख्य सड़क पर वृक्ष : फतहसागर पाल की मुख्य सड़क के पूर्वी किनारे पर अनेक तरह के वृक्ष लगे हुए हैं, जिनमें कुछ विरासत में मिले, कुछ प्राकृतिक रूप से बड़े हुए एवं कतिपय सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा लगाये गये। इनमें से विरासत में मिले कीकर (Pithecellobium dulce) के पेड़ों को पाल के उत्तरी छोर से काट दिया गया एवं दक्षिणी छोर पर वर्तमान में भी फल–फूल रहे हैं। इनके मध्य में विलायती बबूल (Prosopis juliflora) भी हैं, जिन्हें भी हटाया जाना चाहिये। इसी प्रकार कनेर (Oleander), पीली कनेर (Yellow oleander), पीला गुलमोहर (Peltophorum), नीम (Azadirachta indica), पीपल (Ficus religiosa), बोटल पाम (Hyophorbe lagenicaulis), रूद्राक्ष (Elaeocarpus ganitrus) आदि भी मौजूद हैं।

पाल पर गमलों में विकसित पौधे : ''हरित उदयपुर कार्यक्रम'' के तहत फतहसागर की पाल पर प्लास्टिक के बड़े गमलों में सुन्दर पौधे एरेका पाम, सागा पाम, बोटल पाम आदि लगाये गये। समय के साथ इन गमलों में कुछ पौधे सूख गये, कुछ गमलों के अनुपात में बड़े हो गए, तो कुछ पौधों के गमले टूट गये। वर्तमान में भी कुछ गमलों में पौधे लगे हुए हैं। नगर विकास प्रन्यास द्वारा प्लास्टिक के उसी नाप के बड़े गमलों में एरिका पाम, सागा पाम, ऐसपेरागस, स्पाईडर आदि के पौधे पुनः लगाये जा सकते हैं एवं उनके रखरखाव व पानी की समुचित व्यवस्था की जावे ताकि पाल की सुन्दरता में अभिवृद्धि हो सके।

नेवल प्रशिक्षण केन्द्र की सामग्री : पाल की मुख्य सड़क के मध्य मोती महल (टाया पैलेस) के सामने फर्स्ट राज. एन.सी.सी. नेवल यूनिट एवं रिजनल कोचिंग सेन्टर (कयाकिंग, केनोइंग एवं वाटर स्पोर्ट्स) के लोहे के कन्टेनर, टेन्ट एवं उनके बाहर पड़ी कीमती नावें एवं अन्य सामग्री अव्यवस्थित रूप से पड़ी रहती हैं। सूर्य के तीव्र प्रकाश से खुले में पड़ी उक्त नावों के तड़कने की पूरी संभावना रहती है। इस केन्द्र को मुख्य पाल पर विकसित करने का कोई औचित्य नहीं है, इसे फतहसागर के अन्य क्षेत्र, जहाँ पर्यटकों की आवाजाही न्यून हो, विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार से बिखरी हुई सामग्री से पाल की सुन्दरता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

ओवरफ्लो पुलिया के साथ अतिरिक्त पुलिया का निर्माण : वर्तमान में फतहसागर के ओवरफ्लो स्थल पर स्थित पुलिया को चौड़ा करना तो विरासत को नुकसान पहुँचाना है, लेकिन फतहसागर की पाल के प्रथम खण्ड में वाहन पार्किंग के कारण वाहनों का आना–जाना लगा रहता है। इससे पुलिया से वाहन निकालना अक्सर कुछ कठिन होने के साथ पैदल चल रहे पर्यटकों एवं शहरवासियों को भी काफी असुविधा रहती है। इसके अतिरिक्त झील के ओवरफ्लो के समय यह स्थिति और भी अधिक विकट होती है।

ऐसी स्थिति में पाल पर पहुंचने के लिए एक अतिरिक्त मार्ग की महत्ती आवश्यकता है। विशेषज्ञों के परामर्श से विरासत में मिली पुलिया को बिना नुकसान पहुंचाए एक नई पुलिया का निर्माण किया जाना चाहिये। यह पुलिया वर्तमान पुलिया के समरूप होनी चाहिये। इसके लिए वर्तमान पुलिया के पूर्वी किनारे से कुछ दूरी पर इस पुलिया के तर्ज पर मेहराब बनाकर एवं मध्य क्षेत्र के झरने का स्वरूप यथावत् बनाए रखते हुए बनाना चाहिये। इससे आगे सहेलियों की बाड़ी स्थित इस नाले के बहाव क्षेत्र को भी सुन्दर झरने के रूप में विकसित किया जा सकता है। इस पुलिया के निर्माण फलस्वरूप पाल के प्रारम्भ में बने सुविधा कक्ष को भी किसी उपयुक्त स्थल पर स्थानान्तरित करना पड़ेगा।

फतहसागर झील संरक्षित क्षेत्र घोषित हो: फतहसागर झील को झील विकास प्राधिकरण के प्रस्ताव पर राज्य सरकार ने संरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया है। यह बड़गांव तहसील के देवाली गांव के खसरा नं. 52 में 273.045 हेक्टयर भूमि झील संरक्षित क्षेत्र में शामिल है। इसके अनुरूप झील के निर्धारित किए क्षेत्र में नौकायन जेटी का निर्माण, तैरते हुए फव्वारें, वॉटर स्पोर्ट्स, मछली आखेट, बर्ड वॉचिंग, पिकनिक, घुड़सवारी, तैराकी, केनोईन व साइक्लिंग, खुदाई करने व भराव ड़ालने, बहकर आने–जाने वाले पानी के मार्ग में अवरोधक खड़ा करने, वनस्पति को साफ करने, जलाने व उगाने, पानी के तापमान, भौतिक, रासायनिक व जैविक विशेषताओं पर परिवर्तन लाने वाली गतिविधियों, सीवरेज झील में डालने, विषय विशेषज्ञों एवं अन्य शोधार्थियों को झील के जल, जलीय जीवों, पौधों व प्रदूषण को लेकर अध्ययन, सर्वे, शोध व अनुसंधान, परिसीमन तथा नेवीगेशन सहायता के लिए सूचना पट्ट लगाने, पीने के पानी को झील से उठाने, निर्माण, पुनर्निर्माण, परिवर्तन या निर्माण को ध्वस्त करना आदि के लिए अब नगर विकास प्रन्यास, उदयपुर के माध्यम से राजस्थान झील विकास प्राधिकरण से स्वीकृति लेनी होगी। वर्तमान में फतहसागर झील नगर विकास प्रन्यास को हस्तान्तरित कर दी गई है।

झील की प्रदूषण समीक्षा एवं परिदृश्य

- झील में गन्दगी एवं प्रदूषण का स्तर निरन्तर बढ़ता जा रहा है।
- भामाशाह एवं गुरु गोविन्द सिंह पार्क के पास नियमित खाद्य पदार्थ की बिक्री से इस क्षेत्र में गन्दगी बढ़ने से झील प्रदूषित हो रही है।
- झील के पश्चिम की ओर उपला तालाब में गन्दगी बढ़ने से इसकी सतह पूरी तरह जलकुम्भी से ढकी रहती है।
- झील की सीमा के नजदीक समुचित खाद्य एवं पार्किंग व्यवस्था अपेक्षित है।
- झील के देवाली छोर पर झील दर्शन वाटिका के समीप निचली तलाई है जिसके विकास पर अब तक ध्यान नहीं दिया गया है। यदि इसका विकास नहीं किया गया तो यह अतिक्रमण के चंगुल में फंस सकती है। उत्तर दिशा में मात्र एक अव्यवस्थित वॉक–वे बनाया गया है।
- झील की सीमा में स्थित निजी सम्पत्तियाँ बेतरतीब रूप से पनप रही हैं, जिनसे झील की सुन्दरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। विरासत में मिली इस झील के सौन्दर्य के साथ खिलवाड़ भविष्य में न हो, यदि ऐसा हुआ तो अगली पीढ़ी हमें कभी क्षमा नहीं करेगी।
- झील की पाल के उत्तरी क्षेत्र पर जन स्वास्थ्य एवं अभियान्त्रिकी विभाग का अव्यवस्थित पम्प हाउस है। यह इस झील की सुन्दरता में वृद्धि नहीं करता है।
- झील की रानी रोड़ पर बनी वाटर डायवर्सन चैनल का जल पुनः झील में डाला जा रहा है। आज नहीं तो आगे चल कर इसके माध्यम से गन्दे पानी का झील में समावेश होगा।
- झील से जलीय खरपतवार एवं सतह पर तैरती हुई गन्दगी को निकालने की कोई नियमित व्यवस्था नहीं है।
- झील को भरने वाली स्वरूप सागर नहर, मदार नहर एवं बड़ी तालाब के नाले की नियमित सफाई व्यवस्था नहीं है। वर्षा ऋतु में वर्षभर इन नहरों/नाले में एकत्रित गन्दगी, जल प्रवाह के साथ झील में गिरती है, जो झील के प्रदूषित होने का मुख्य स्रोत है।
- झील में नाव संचालन के लिए बनी जेटियाँ साधारण स्तर की है एवं सुरक्षा साधनों से परिपूर्ण नहीं है। नावों की बनावट एवं रख–रखाव भी साधारण स्तर का है। डीज़ल मोटर इंजन से संचालित नावों पर प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है।
- झील के दक्षिणी–पश्चिमी क्षेत्र पर बसी आवासीय कॉलोनियों का प्रदूषित जल झील में गिरता है। इसे पम्प एवं प्राकृतिक बहाव द्वारा झील से दूर बहाव के लिए कोई समुचित व्यवस्था नहीं है।

महत्वपूर्ण सुझाव

- संपूर्ण झील की नियमित सफाई व्यवस्था आवासीय कॉलोनी की सफाई व्यवस्था की तरह हो – यह ठेका पद्धति या सफाईकर्मियों के माध्यम से की जानी चाहिये।
- सफाई व्यवस्था के अन्तर्गत जलीय खरपतवार, जलकुम्भी एवं सतह पर तैरती गन्दगी को नियमित रूप से हटाना आवश्यक है।
- झील सीमा पर बाड़, पत्थर/सीमेन्ट की बंसियों का निर्माण एक जैसा एवं उच्च स्तर का होना चाहिये।
- झील के किनारे पर स्थित प्रत्येक होटल एवं आवासीय भवनों में जलशोधन यन्त्र स्थापित नहीं है। यह यन्त्र आवश्यक रूप से स्थापित होने चाहिये तथा नियमों के अन्तर्गत कठोरता से इसकी पालना करवायी जानी चाहिये।
- झील के चारों ओर एवं नेहरू गार्डन में प्रकाश व्यवस्था उच्च स्तर की हो, समय सीमा में हो, जिससे पर्यटक उस समय झील को देखने के लिए पाल या झील के किनारे पर भ्रमण कर सकें।
- निश्चित समय सीमा में झील में तैरने वाले फव्वारें, पाल पर स्थित विभूति पार्क, गुरु गोविन्द सिंह पार्क, नेहरू गार्डन में रंग–बिरंगी प्रकाश व्यवस्था के साथ संचालित रहे। पाल पर म्यूजिकल फव्वारें की व्यवस्था हो। रिंग रोड़ एवं पाल पर संगीतमय ध्वनि समय सीमा के अनुसार गूँजती रहनी चाहिये। इससे पर्यटकों को आनन्दमय वातवारण महसूस होगा।
- झील सीमा में स्थित निजी सम्पत्तियों का झील के सौन्दर्यीकरण वृद्धि हेतु उपयोग होना चाहिये। इसके लिए नगर विकास प्रन्यास इनका बाजार भाव पर अधिग्रहण कर ले या मालिक की सहमति के आधार पर अति सुन्दर बगीचे, म्यूजिकल फव्वारें व टेलीस्कॉप लगाने की व्यवस्था होनी चाहिये।
- मुम्बईया बाजार के व्यवसायियों की सहमति एवं प्रताप स्मारक के विचार–विमर्श से स्थानीय प्रशासन (नगर निगम/नगर विकास प्रन्यास) भामाशाह पार्क में बहुत व्यवस्थित रूप से फूड हब का निर्माण कराया जा सकता है तथा इसे व्यवसायियों को उपयुक्त पद्धति से आवंटित किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त दो या तीन स्थानों पर फूड हब एवं पार्किंग स्थान का निर्माण हो। इसके लिए (1) नीमच माता के नीचे स्थित शिक्षा विभाग के छात्रावास (2) काले किवाड़ स्वरूप सागर नहर के सामने वाले ललित होटल (लक्ष्मी विलास) के नीचे खाली स्थान तथा (3) राजीव गांधी पार्क के पश्चिमी भाग के पास सरकारी भूमि उपयुक्त है।
- व्यवस्थित फूड हब बन जाने के पश्चात् झील क्षेत्र में थैलों पर खाद्य सामग्री बिक्री हेतु पूर्ण निषेध होना चाहिये। वर्तमान में स्थापित थैले व्यवसायियों को फूड हब में प्राथमिकता के आधार पर स्थान आवंटित किये जा सकते हैं।
- पिछोला–स्वरूपसागर झील से फतहसागर तक लिंक नहर के वर्तमान स्वरूप को बनाये रखते हुए इसकी नियमित सफाई एवं सौन्दर्यीकरण पर ध्यान देना आवश्यक है।
- मदार नहर – चिकलवास फीडर के देवाली छोर पर एक किनारे पर नई बसावट का उचित स्थल पर स्थानान्तरण किया जाये किन्तु फीडर के किसी भी हिस्से को नहीं ढका जाये, क्योंकि ढकने से नियमित सफाई संभव नहीं हो पायेगी।
- मदार नहर के देवाली छोर के मुख्य मार्ग की पुलिया के पास प्रदूषित जल निकासी के लिए एक गेट लगाकर इसे झील में प्रवेश करने से रोकने हेतु यथोचित कदम उठाये जाने चाहिये।
- उपला तालाब, छोटी तलाई एवं निचली तलाई को ऊँचे सुन्दर पुलों के माध्यम से मुख्य झील से इस प्रकार जोड़ा जाये कि पुल के नीचे होकर नावें सुगमता से वर्ष भर संचालित हो सके।